जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – जनवरी 2023 ।। अंक – 30 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

फूलों की खेती से फैली स्वावलंबन की खूशबू
(पृष्ठ – 02)

ज़िद और जुनून ने शांति को बनाया कारोबारी
(पृष्ठ – 03)

सामाजिक मुद्दों के हल के लिए मुखर है ग्राम संगठन
(पृष्ठ – 04)

नई उम्मीदों को पूरा करने का वर्ष 2023

जीविका बिहार में गरीबी उन्मूलन के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सतत् प्रयत्नशील है। जीविका के प्रयासों के कारण राज्य की लाखों महिलाएं आत्मनिर्भर होकर समाज के बदलाव में सहयोग प्रदान कर रही हैं। बीते वर्ष में जीविका दीदियों ने आजीविका संबंधी गतिविधियों सहित अन्य कई क्षेत्रों में स्वर्णिम उपलब्धियों को हासिल किया है। जीविका दीदियों ने अपने सपनों को मूर्तरूप प्रदान करते हुए राज्य एवं देश की अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक बदलावों में अपनी अहम एवं अमिट छाप छोड़ी। वर्ष 2023 भी जीविका दीदियों के लिए स्वर्णिम एवं कुछ नया करने वाला होगा। नववर्ष जीविका दीदियों के जीवन को और बेहतर करने वाला होगा। जीविकोपार्जन की गतिविधियों से जहां दीदियों की आर्थिक स्थिति में और भी ज्यादा सुधार होगा, वहीं वह अपने नवाचारों से नई पहचान बनाने में भी सफल होंगी।

नए साल में जीविका दीदियों द्वारा विभिन्न जीविकोपार्जन के क्षेत्र में कार्य की योजना बनाई गयी है, जिसमें कृषि, गैर कृषि, पशुपालन, स्वरोजगार एवं नए उद्यम जैसे क्षेत्र प्रमुख हैं। कृषि के क्षेत्र में फसल उत्पादन की आधुनिक एवं वैश्विक जानकारी जीविका दीदियों के लिए अत्यंत लाभकारी होगी। कंपनियों के साथ जुड़ाव के कारण दीदियों के उत्पाद को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहचान एवं विपणन का अवसर उपलब्ध होगा, वहीं उसकी उचित कीमत भी उन्हें हासिल होगी। विभिन्न उद्यमी योजनाओं में भी जीविका दीदियों की हिस्सेदारी तय है। विभागों द्वारा स्वयं सहायता समूहों को विभिन्न उद्यमी योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए विशेष प्रावधान तय किया गया है जो नए साल में और भी ज्यादा तेजी से सफलीभूत होगी।

उद्योग विभाग द्वारा जीविका दीदियों को विभिन्न उद्योग स्थापित करने हेतु 10 लाख के ऋण का प्रावधान है। पशुपालन के क्षेत्र में भी नए वर्ष में व्यापक तरीके से कार्य की योजना है, जिसके तहत मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, गाय पालन एवं बकरी पालन आदि प्रमुख है। सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत जीविका दीदियों को उद्यमी बनाया जा रहा है। नए वर्ष में ग्रामीणों के साथ–साथ शहरी लक्षित परिवारों को भी इस योजना से जोड़ने की योजना है। जीविका दीदियों को ग्रामीण बाजारों के माध्यम से भी जीविकोपार्जन के क्षेत्र से जोड़ा जा रहा है। नए साल में इसके और विस्तार की संभावना है। नए वर्ष में जीविका की विभिन्न योजनाओं जैसे–दीदी की रसोई, दीदी की नर्सरी, सिलाई केन्द्र, मधुमक्खी पालन, मछली पालन आदि जीविकोपार्जन क्षेत्र द्वारा भी दीदियों के आजीविका संवर्द्धन को बल मिलेगा।

नव वर्ष में मिशन लखपति भी अपने पूर्ण स्वरूप में होगा और इसके तहत भी दीदियों को एक से ज्यादा आजीविका संवर्द्धन से जोड़ा जाएगा। नए वर्ष में दीदियों के परिजनों को कौशल विकास योजना द्वारा प्रशिक्षित कर रोजगार से जोड़ने का कार्य किया जाएगा ताकि बदलाव की तस्वीर में हर प्रकार का रंग दिखे। उद्यमिता के नए अवसरों की श्रृंखला में स्टॉर्टअप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम द्वारा ग्रामीण स्तर पर काम कर रहे उद्यमियों को जीविका द्वारा तकनीकी एवं आर्थिक मदद दी जा रही है। जिससे उन्हें अपने व्यवसाय को बढ़ाने में सहयोग मिल रहा है। इस कार्यक्रम से 20 हजार से ज्यादा सूक्ष्म उद्यम कर रहे उद्यमियों को अपना व्यवसाय बढ़ाने का मौका मिला है। इसके तहत दीदी एवं उनका परिवार खुशहाली की तरफ बढ़ रहा है। नए साल में इस क्षेत्र में भी और ज्यादा कार्य किया जाएगा।

इस प्रकार नए वर्ष में जीविका दीदियों को रोजगार का नया अवसर मिलेगा और उनके जीवन में एक नया विहान आएगा। इस दिशा में जीविका के सामुदायिक संगठनों, प्रशिक्षित कैडरों एवं जीविकाकर्मियों द्वारा कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। नया वर्ष जीविका दीदियों के लिए आजीविका संवर्द्धन से सशक्तीकरण का होगा।

फूलों की खेती से फैली स्वावलंबन की खूशबू

भोजपुर जिला के कोइलवर प्रखंड के कुल्हड़िया पंचायत की अनीता देवी के पास एक समय आर्थिक समस्याओं का अंबार था। वह खुद गृहणी थीं और पति पेंटिंग का कार्य करते थे। परिवार का भरण–पोषण काफी कठिनाईयों के साथ हो पाता था। वर्ष 2018 में जब अनिता गणेश जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं तो उनमें रोजगार की समझ विकसित होने लगी और उन्होंने आय सृजन की गतिविधियों से खुद को जोड़ना शुरू कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि अनिता की आर्थिक स्थिति में बदलाव आने लगा। वर्ष 2021 में समूह से ऋण लेकर फूलों की खेती एवं उसके विपणन का व्यवसाय शुरू किया। समूह से 40,000 रुपया का ऋण लेकर उन्होंने 1 वर्ष के लिए 1 बीघा जमीन पट्टे पर लिया और फूलों की खेती शुरू की। इसके लिए 16,000 फूलों का पौधा कलकत्ता से अनिता ने मंगवाया। प्रति हजार पौधे की कीमत 3,000 रुपया आया। इस प्रकार पौधों के खरीद में कुल 48,000 रुपया का खर्च आया। दीदी बताती हैं कि –'90 दिनों में 16,000 पौधा तैयार हो गया। जिसके बाद फूलों का उत्पादन शुरू हुआ। फूलों के उत्पादन के बाद उसे होलसेलर के पास बेचने लगीं। एक कुड़ी फूल औसतन 300 रुपया में बिकता है। पर्व त्यौहार एवं शादी के सीजन में यह दर बढ़कर 700 रुपया प्रति कुड़ी तक चला जाता है। 300 कुड़ी फूल बेचने पर 90,000 रूपये की आमदनी होती है। जिसमें शुद्ध लाभ लगभग 30,000 रूपये का हो जाता है। पुनः वर्ष 2022 में अनिता ने समूह से 50,000 रुपया का ऋण लेकर फूलों के उत्पादन एवं विपणन के व्यवसाय में लगाया। इसबार भी अनिता को 30,000 रुपया का शुद्ध लाभ हुआ। अनीता बताती हैं कि –'तीन माह में फूलों के फसल का चक्र पूरा हो जाता है, जिसके बाद खेत में अन्य पैदावार भी लगाती हूँ। जिससे कि घर में खाने के लिए आलू, चावल, सरसों का तेल आदि उपलब्ध हो जाता है। आज अपनी कुशल व्यवसायिक क्षमता एवं लगन के कारण अनिता की आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है और वह अपने सपनों को आकार देने लगी हैं।

अनीता ने स्वरोजगार से संभाली घर की बागडोर

अवसर की अनुपलब्धता के कारण अक्सर लोगों को काम की तलाश में पलायन करना पड़ता है। कुछ लोग अच्छे विकल्प की तलाश में तो कुछ मजबूरी में पलायन को विवश होते हैं। किशनगंज जिला के टेढ़ागाछ प्रखंड की रहने वाली अनीता दीदी के पति भी काम की तलाश में बिहार से बाहर जाते थे। इस वजह से अनीता दीदी को अकेले तीन बच्चों की परवरिश करनी पड़ती थी। परिवार की जिम्मेदारी अकेले संभालने के कारण दीदी को कई प्रकार की मुसीबतों का सामना भी करना पड़ता था।

वर्ष 2018 से अनीता जीविका के माध्यम से 30 हजार बैंक ऋण लेकर टेढ़ागाछ प्रखंड कार्यालय के पास नाश्ता एवं खाना की दुकान संचालित कर रही हैं। दीदी बताती हैं कि–'महीने में दुकान से लगभग पन्द्रह से अठारह हजार रुपए तक की कमाई हो जाती है। दुकान की आमदनी से एक तरफ घर में आर्थिक खुशहाली आई है, वहीं काम के सिलसिले में पति का पलायन रूका है। अब पति–पत्नी एकसाथ घर–गृहस्थी को संभाल रहे हैं। दीदी बताती हैं कि दुकान की आमदनी से पूरे परिवार का भरण–पोषण सही तरीके से हो पा रहा है।' दीदी आगे कहती हैं कि इसी आमदनी से घर की मरम्मति, घरेलू जरूरत से संबंधित सामान खरीदने के साथ–साथ तीन बच्चों को पढ़ा भी रही हूं। दीदी प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहती हैं कि बचत के पैसे से बैंक में पंद्रह हजार रुपए जमा भी किया है।

अनीता दीदी वर्ष 2017 में जीविका से जुड़ीं और स्वयं सहायता समूह की बैठकों में नियमित रूप से भाग लेने लगीं। समूह की बैठकों में भाग लेने से उनका क्षमतावर्धन हुआ। अनीता कहती हैं कि समूह की बैठकों में भाग लेने के बाद उनको बैंकिंग, बचत, ऋण, स्वरोजगार आदि की जानकारी मिली और यह आत्मविश्वास जगा कि हम भी कुछ कर सकते हैं। इसी का परिणाम है कि आज अनीता गरिमा के साथ अपना स्वरोजगार कर रही हैं।

योजना से हुआ जुड़ाव तो मीनू का बदला जीवन

मधुबनी जिला के बिस्फी प्रखंड की मीनू देवी की शादी भोज पंण्डोल ग्राम के विनय चंद्र मिश्रा के साथ 18 वर्ष की उम्र में हो गयी। मीनू के पति मुंबई के एक कंपनी में नौकरी करते हैं। उनकी आमदनी से पारिवारिक जिम्मेंदारियों का बोझ उठाना मुश्किल था। पारिवारिक जिम्मेदारियों के बढ़ने के साथ मीनू में कुछ नया कर अर्थोपार्जन की भावना जागृत हुई। आर्थिक उपार्जन के लिए वह निरंतर प्रयास करती रहती थीं। मीनू को दो बेटियां एवं एक बेटा है। बेटियों की शादी के लिए उन्हें कर्ज तक लेना पड़ा। बेटियों की शादी हुई और वे अपने–अपने ससुराल चली गई, लेकिन मीनू के मन में कुछ करने का जज्बा खत्म नहीं हुआ। 2014 में इनका जुड़ाव बंधन जीविका स्वयं सहायता समूह से हुआ, जहां से उन्हें जीविका परियोजना के विषय में जानकारी मिली। मीनू ने स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन एवं संकुल स्तरीय संघ में अपने उद्यम के विषय में जानकारी दी। उन्होंने समुदाय आधारित संगठनों को यह बताया कि वे अचार, पापड़, तिलोड़ी, अदौड़ी आदि अपने घर पर ही बनाती है और उसे जगह–जगह जाकर बेचती है। उसके पास पूंजी का सख्त अभाव है, जिसके कारण वह मांग के अनुरूप बाजार में समानों की आपूर्ति नहीं कर पाती है। जिसके बाद जीविका के प्रयास से उन्हें केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित 'प्रधान मंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना' के साथ जोड़ा गया। इस योजना से जुड़ाव के बाद मीनू के उत्साह में वृद्धि हुई और उनके काम में गति आ गयी। मीनू अपने उत्पादों को अलग–अलग जगहों पर जाकर बेचने लगी। आज मीनू अपने उद्यम से बेहद उत्साहित एवं आशान्वित हैं। उनकी मासिक आमदनी 15,000 से 20,000 रूपये तक की हो गयी है। जीविका के सहयोग से उनके उद्यमी होने का सपना साकार हो रहा है। अब मीनू अपने परिवार के साथ प्रसन्न है।

ज़िद और जुनून ने शांति को बनाया कारोबारी

एक समय में शांति देवी को उनके पति और परिवार वालों ने यह कहकर नकार दिया था कि बिजनेस तुम्हारे बस की बात नहीं है। परिवार, समाज के साथ–साथ पति ने भी शांति से कहा कि घर में रहकर खाना बनाओ और बच्चों को पढ़ाओ। इसी काम को कर लो तो बहुत होगा। यह बात शांति के मन में चुभ गई और उसने अपने मन में यह गांठ बांध लिया कि वह अपना कारोबार शुरू करेगी और समाज एवं परिवार को यह दिखाएगी कि महिला होते हुए भी वह बिजनेस कर सकती है। इसी जिद और जुनून की बदौलत शांति आज हर माह दो लाख रुपये का कारोबार कर रही हैं। शांति मुजफ्फरपुर जिले के कुढ़नी प्रखंड के महंत मनियारी गांव की रहने वाली हैं। शांति आंचल स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं। गृहणी से उद्यमी बनी शांति का सफर काफी मुश्किलों भरा रहा है। शान्ति बताती हैं कि–'वर्ष 2018 में कृषि उद्यमी के लिए प्रशिक्षण लिया और यह तय किया कि अब अपनी एक छोटी सी दुकान खोलेंगी।' जीविका में जुड़ने के बाद शांति ने वीआरपी के रूप में काम करना शुरू किया। गांव में लोगों को खेती–बाड़ी से संबंधित सलाह देना शुरू किया। कृषि उद्यमी के रूप में प्रशिक्षण के बाद उन्हें कृषि संबंधी कार्य आसान लगने लगा। पचास हज़ार रुपये की लागत से शांति ने गांव में ही एक दुकान खोल लिया। शुरुआती दौर में लोगों को दुकान के बारे में बताना, गांव में घूमना और बीज तथा जैविक खादों के प्रयोग को बढ़ावा देने का काम करते हुए अपने दुकान की बिक्री को बढ़ाया। पिछले 3 सालों में शांति ने 50 हज़ार से बढ़ाकर अपने कारोबार का टर्नओवर करीब दो लाख पहुंचा दिया है। जिससे उन्हें पन्द्रह से बीस हज़ार की मासिक आमदनी हो जाती है। इसके साथ ही कृषि से जुड़ाव के चलते शान्ति ने नर्सरी भी खोलने का मन बनाया। जिसमें जीविका और वन विभाग के संयुक्त तत्वाधान में इन्हें नर्सरी दी गई। जहां अब चालीस हजार पौधे हैं। वन विभाग द्वारा शांति देवी को एक लाख चालीस हजार रुपये की सहायता राशि भी दी गई, जिससे यह काम आसान हो गया है। नर्सरी से प्रतिमाह लगभग 10 हज़ार तक की आमदनी हो रही है। शांति कहती हैं कि जीविका की मदद से अब प्रतिमाह 25 हज़ार रुपये तक कि आमदनी कर रही हूं।

सामाजिक मुद्दों के हल के लिए मुखर है ग्राम संगठन

वर्त्तमान समय में जीविका महिला सशक्तीकरण की पर्याय है। जीविका द्वारा संपोषित ग्राम संगठन, केवल आर्थिक सशक्तीकरण ही नहीं बल्कि सामाजिक सशक्तीकरण के लिए अथक प्रयास किया जा रहा है, जिसमें इन्हें अप्रतिम सफलता हासिल हुई है। जीविका के ग्राम संगठनों में सामाजिक विषयों पर निरंतर चर्चा होती रहती है और सामाजिक मुद्दों को मुख्य एजेंडा के रूप में शामिल किया जाता है। इन मुद्दों में शिक्षा, बाल–विवाह, घरेलु हिंसा, दहेज प्रथा, लैंगिक विषमता, भ्रुण हत्या, नशामुक्ति आदि प्रमुख हैं। इसके साथ ही स्वच्छता जैसे अत्यंत महत्वपुर्ण मुद्दों को जागरूकता अभियान, चर्चा–परिचर्चा के माध्यम से हल करने में ग्राम संगठन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

जीविका के ग्राम संगठनों के प्रयास के फलस्वरूप आज बाल–विवाह की घटना नहीं के बराबर हो रही है। नियमित रूप से यह ग्राम संगठन के चर्चा का विषय होता है कि 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चियों का विवाह करना कानूनन अपराध तो है ही साथ ही साथ इसका सीधा प्रभाव बच्चियों के स्वास्थ्य पर भी पड़ता है।

बिहार में 2016 से ही शराब बंदी कानून लागू है। इस कानून को लागू करवाने में जीविका दीदियों का महत्वपूर्ण योगदान है। जिसका उल्लेख माननीय मुख्यमंत्री, बिहार के द्वारा प्रत्येक मंच से किया जाता है। जीविका के ग्राम संगठनों के द्वारा 26 नवंबर को प्रत्येक वर्ष व्यापक रूप से नशा मुक्ति दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सामाजिक मुद्दों को सुनने एवं उसके हल करने की दिशा को सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक जीविका ग्राम संगठनों के द्वारा सामाजिक कार्य समिति गठित हैं, जिसमें प्रतिनिधि निकाय के तीन से पांच सदस्य होते हैं। जिसका मुख्य कार्य ग्राम संगठन में कोई सामाजिक मुद्दा चिन्हित हुआ है तो उसकी जांच करना एवं उन मुद्दों का हल निकाल कर उसका प्रतिवेदन ग्राम संगठन को प्रस्तुत करना है।

प्रदेश में सामाजिक मुद्दों को सुलझाने हेतु 41,932 सामाजिक कार्य समिति के सदस्य ग्राम संगठनों के द्वारा प्रशिक्षित किये गये हैं। जिनके द्वारा पूरे बिहार में शिक्षा, पात्रता (इन्टाईटलमेंट), घरेलु हिंसा, स्वच्छता, बाल–विवाह, दहेज एवं नशा से संबंधित 1 लाख 38 हजार 297 मुद्दों का निराकरण किया गया है।

वर्त्तमान समय में बिहार का सामाजिक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है, जिसमें जीविका की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह अपने संगठनात्मक शक्ति के लिए विश्व विख्यात है। आज जीविका से जुड़े अधिकांश परिवार गरीबी के दुष्चक से बाहर आ चुके हैं और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ मुखर हैं। ग्रामीण महिलाएं ग्राम संगठन के एक सदस्य के रूप में अपने मुद्दों को जो व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकृति का हो सकता है, ग्राम संगठन के समक्ष रखती हैं। आवश्यकतानुसार इस पर चर्चा कर, जागरूकता अभियान चलाकर, समुदाय के लोगों को सजग करतीं है। जरूरत पड़ने पर अपनी एकीकृत शक्ति का प्रदर्शन कर सामाजिक समस्याओं का अविलंब निदान करती हैं, जिसे समुदाय के अन्य लोग भी स्वीकार करते हैं। ग्राम संगठन के प्रयासों से ही बाल–विवाह, घरेलु हिंसा, दहेज, नशापान जैसी कुरीतियों में कमी आई है एवं लड़कियों की शिक्षा आदि के क्षेत्र में व्यापक परिवर्त्तन देखा जा रहा है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, सिवान
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार